सत्यमेव जयते

रोज़गार समाचार

www.rojgarsamachar.gov.in
www.employmentnews.gov.in

साप्ताहिक

अंग्रेजी एवं उर्दू में भी प्रकाशित
(वार्षिक शुल्क : ₹ 350)

खण्ड 37 अंक 31 पृष्ठ 40 | नई दिल्ली 3-9 नवंबर 2012 | ₹ 8.00

रोज़गार सारांश

रेलवे

- पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे को 2018 ग्रुप 'डी' पदों की आवश्यकता.

अंतिम तिथि: 23.11.2012

- पूर्वी मध्य रेलवे को विभिन्न विधाओं में 26 खिलाड़ियों की आवश्यकता.

अंतिम तिथि: 21.11.2012

सीमा सुरक्षा बल

- महानिदेशालय सीमा सुरक्षा बल को 386 सहायक उपनिरीक्षक (आशुलिपि) और हेड कांस्टेबल (मंत्रालयिक) की आवश्यकता

अंतिम तिथि: प्रकाशन के तीस दिन बाद

भारतीय नौसेना

- भारतीय नौसेना कार्यपालक शाखा में पायलट/आब्जर्वर के रूप में अल्प सेवा कमीशन (एसएससी) के लिए अविवाहित भारतीय नागरिकों से आवेदन आमंत्रित.

अंतिम तिथि: 09.11.2012

केन्द्रीय रोज़गार कार्यालय

- केन्द्रीय रोजगार कार्यालय द्वारा विभिन्न पदों के लिए आवेदन आमंत्रित.

अंतिम तिथि: 26.11.2012

कृ.वै.भ.बोर्ड

- कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई सी ए आर) के विभिन्न संस्थानों के अधीन विभिन्न वैज्ञानिक पदों के लिए आवेदन आमंत्रित.

अंतिम तिथि: 20.11.2012

गन एवं शेल निर्माणी

- गन एवं शेल निर्माणी, कोसीपोर को 55 इलैक्ट्रोप्लेटर, ब्लैकस्मिथ, इलेक्ट्रीशियन, फिटर, टर्नर इत्यादि की आवश्यकता.

अंतिम तिथि: प्रकाशन के बाद पंद्रह दिन

बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों, सशस्त्र सेनाओं रेलवे और अन्य सरकारी विभागों की अन्य रिक्तियों के लिए अंदर के पृष्ठ देखें.

ग्रामीण उत्थान में महिला चैंपियन

—धीरज प्रधान

नारी शक्ति महिला संघ (एनएसएमएस) बालाघाट जिले की पारसवाडा और बालाघाट विकास खंड की 5597 महिलाओं के संघर्षों और प्रयासों की गाथा है. ये महिलाएं बालाघाट के 129 गांवों से हैं और मार्च 2008 में इस यात्रा की शुरुआत एक छोटे से प्रयास से हुई. शुरुआती दौर में एक-एक सदस्य जोड़कर मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रारंभ किए गए **तेजस्विनी ग्रामीण महिला अधिकारिता कार्यक्रम** जिसे विकास कार्यों के लिए व्यावसायिक सहायता (प्रदान) द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा था, के अंतर्गत 10-15 सदस्यों वाले **स्वयं-सहायता दलों** का गठन किया गया. इनके पास आजीविका के लिए बेहतर संसाधन न होने, साहूकारों से ऋण लेने के लिए संपत्ति गिरवी रखने, घरेलू हिंसा और अन्याय से स्वयं से लड़ने जैसी समस्याएं सामने थी. एक-साथ जुड़ने के इन प्रयासों के फलस्वरूप आर्थिक रूप से निर्बल आदिवासी और दलित महिलाओं वाले 437 स्वयं सहायता समूहों का गठन हो पाया. स्वयं सहायता समूह में महिलाएं प्रत्येक सप्ताह मिलकर और धन की बचत कर एक-दूसरे की सहायता आर्थिक रूप से करती हैं, ताकि परिवार की उपभोक्तावादी और उत्पादक मांगे पूरी की जा सकें. इसके अतिरिक्त यह उन्हें अपनी रोजमर्रा की कहानी और आम समर्थन के मुद्दे एक-दूसरे से बांटने का मंच भी प्रदान करता है.

क्रम संख्या	विवरण	राशि
1.	कुल बचत	67.17 लाख
2.	कुल आंतरिक राशि जनित	2.32 करोड़
3.	कुल मूलधन पुनःदेय	1.84 करोड़

स्वयं सहायता समूहों की स्थिति (जनवरी, 2012 को) तीन वर्षों की यात्रा के बाद, स्वयं सहायता समूह बैंक ऋण द्वारा एकीकृत होने के लिए आत्मविश्वास से परिपूर्ण है और 50 से ज्यादा स्वयं सहायता समूह अपनी आजीविका प्रयासों को बेहतर करने के लिए इसको लेकर प्रयासरत हैं, इसमें से दो **स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई)** से हैं.

इस यात्रा का दूसरा चरण वर्ष 2010 में प्रारंभ हुआ, जब एक गांव में स्वयं सहायता समूहों ने मिलकर ग्राम स्तरीय समिति (वीएलसी) गठित की. इन समितियों में महिलाएं माह में एक बार मिलकर गांव के विकास से जुड़े मुद्दों, कार्यनीति का निर्धारण और सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में भागीदारी जैसे विषयों पर विचार-विमर्श करती हैं. आज क्षेत्र में 110 से ज्यादा वीएलसी कार्यरत हैं और सरकारी योजनाओं और कार्यक्रमों तक पहुंच बेहतर बनाने के लिए सरकारी संस्थानों से वार्तालाप कर रही हैं. ये वीएलसी शिक्षकों और

स्वास्थ्यकर्मियों की अनुपस्थिति, महात्मा गांधी नरेगा के अंतर्गत रोज़गार और लंबित मजदूरी का भुगतान, घरेलू हिंसा, बाजार से कृषि जानकारी प्राप्त करने, उन्नत सब्जी उत्पादन अपनाने, चावल की विकसित प्रणाली और जैविक प्रयास करने, मदिरा सेवन पर ध्यान रखने एवं बिजली और बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मांगने जैसे क्षेत्रों में कार्यरत हैं. इसके अतिरिक्त ग्रामसभा में भाग लेने और महात्मा गांधी नरेगा के साथ प्राकृतिक संसाधन आधारित एकीकृत योजना 17 गांवों में विकसित करने का कार्यक्रम भी है.

इस शुरुआत को संयुक्त राष्ट्र महिला समर्थन कार्यक्रम के अंतर्गत भी सहयोग मिला. दूसरे चरण से पहले क्षेत्र में 49 सदस्य पंच और 1 सदस्य सरपंच के रूप में चुनी गई.

उदाहरण के रूप में लगभग 2300 घरों में उन्नत सब्जी उगाने और चावल की विकसित प्रणाली को अपनाकर उत्पादकता बढ़ाकर अपनी आय में वृद्धि की है. इनमें से कुछ ने घरों के सामने की भूमि पर बैंगन, मिर्च और टमाटर की उन्नत तकनीक से खेती कर 9000 रु. से अधिक आय प्राप्त करने में सफल रहे हैं. 400 से ज्यादा एसएचजी घरों ने वरमिन कम्पोस्ट के साथ चावल तीव्र वृद्धि प्रणाली अपनाकर लागत कम रखने और उत्पादकता बढ़ाने में सहायता प्राप्त की है. इनमें से कुछ ने 70 डेसीमल क्षेत्र से 21 क्विंटल उत्पादन करने में सफल रहे हैं, जबकि पहले उन्हें सिर्फ 6 क्विंटल प्राप्त होता था. ये सब एसआरआई के द्वारा कम लागत से प्राप्त किया गया.

गांव मदनपुर, सलघाट, जलगांव, कनारी, धीपुर, स्वारजहोडी, धोयनी, भोंडवा, परतापुर, डोंगारबॉडी, उमरिया, खामी, खरकोना, अलीपुर, धुरेंडा और सल्हे एसएचजी सदस्यों ने आगे आकर अन्य ग्रामीण को बेहतर खाद्य सुरक्षा और आजीविका अवसर के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित एकीकृत योजना बनाने के लिए प्रेरित किया. कम भूमि और जल के साथ फसल योजना छोटे और मझौले किसानों के लिए बेहतर है. ग्रामवासी इन योजनाओं को ग्राम सभा द्वारा महात्मा गांधी नरेगा के साथ एकीकृत करने का प्रयास कर रहे हैं, जिससे दीर्घ अवधि में प्रवास को रोकने में सहयोग प्राप्त होगा.

ग्राम पिंडकेपार, धुनादी और गुर्जर में ग्राम स्तरीय समितियों ने युवाओं के बीच तम्बाकू और मदिरा सेवन की बढ़ती प्रवृत्ति पर विचार-विमर्श किया और तीनों गांवों में शांतिपूर्ण रैली आयोजित करने का निर्णय लिया. इसमें पंचायत, स्कूल, पुलिस और सभी आयुवर्ग के ग्रामीणों से सहयोग मांगा गया. इसका क्षेत्र में सकारात्मक प्रभाव देखा गया और मदिरा खपत में तेजी से गिरावट दर्ज की गई. इस दौरान यह महसूस किया गया कि घरेलू हिंसा, असमानता निर्णय लेने में भागीदारी न करना और शिक्षा अभाव से जुड़े मुद्दों में सुधार के लिए गांवों के बीच संपर्क स्थापित करना होगा. इसके फलस्वरूप भौतिक रूप से पहुंचने में संभव 4-5 गांवों वाले 21 संघ बनाए गए. इन संघों ने एक साथ मिलाकर नारी शक्ति महिला संघ बनाए और एकता पर्व मनाए.

संघ का निर्माण निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया गया:

- महिलाओं को परिवार और समाज में बेहतर स्थिति प्राप्त कराने के लिए सहयोग करना, आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को आजीविका के बेहतर साधनों के साथ एकीकृत कर मज़बूत बनाना.

(शेष पृष्ठ 40 पर)

एसएमएस रोज़गार अलर्ट

एम्प्लॉयमेंट न्यूज़/रोज़गार समाचार की पहुंच बढ़ाने के लिए, ग्राहकों के लिए ई-संस्करण की शुरुआत की गई है. आगे और भी ज्यादा पहुंच बढ़ाने के लिए एवं नौकरी से संबंधित मुख्य सूचनाओं को जल्दी से मुहैया करवाने के लिए रोज़गार समाचार की ओर से **'एसएमएस रोज़गार अलर्ट'** सुविधा की शुरुआत हो गई है.

रोज़गार समाचार ने पहले से ही वेबसाइट पर नोटिस के द्वारा मोबाइल नम्बरों का एक वृहत्त डाटाबेस तैयार कर लिया है. नियमित ग्राहकों को प्राथमिकता दी जायेगी.

इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए:

(i) रोज़गार समाचार की वेबसाइट पर जाएं: **www.employmentnews.gov.in/ www.rojgarsamachar.gov.in**

(ii) एसएमएस रोज़गार अलर्ट पर क्लिक करें

(iii) पंजीकरण करें अपना

1. नाम ---------- 2. फ़ोन नं. ----------
3. पता ---------- 4. ई-मेल आई डी ----------

5. रोज़गार अलर्ट का विकल्प (कोई दो चुनें)

(क) सरकारी/सिविल सेवाएं (ख) बैंकिंग/वित्त
(ग) रक्षा/अर्द्ध सैनिक बल (घ) अभियांत्रिकी

दिल्ली पोस्टल पंजीकरण संख्या डीएल-एसडब्ल्यू 1/4100/2012-14 यू. (सी.)-107/2012-14 पूर्व शुल्क के बिना डाक में डालने की अनुमति आर.एन.आई.28729/76 एन.डी.पी.एस.ओ. नई दिल्ली 3/5.11.2012 (₹ 8) प्रकाशन तिथि : 1.11.2012

ग्रामीण उत्थान में...

(पृष्ठ 1 का शेष)

● संघ की जड़ों को मजबूत बनाने के लिए एसएचजी को बैंक, सरकारी और अन्य विकास रूपी संस्थाओं से एकीकृत करने में सहयोग देना.

● सदस्यों को अपने अधिकारों और उन्हें प्राप्ति के प्रति सहयोग करने में शिक्षित करना.

● इस वर्ष पुनः महिलाओं ने 18 फरवरी, 2012 को जागरूकता उत्सव के रूप में मनाया. ये वार्षिक बैठक संघ को अपनी आंतरिक मजबूती बढ़ाने के साथ बाहरी दुनिया से वार्तालाप का एक मंच प्रदान करती है.. महिला सदस्य एक मंच पर आकर अपने गांवों में रैली कर विभिन्न मुद्दों जैसे घरेलू हिंसा, सेवाओं तक पहुंच, महात्मा गांधी नरेगा में श्रम का देरी से भुगतान और बेहतर आजीविका साधन के लिए नाटकों, गीतों और सांस्कृतिक रूपों का प्रयोग करती हैं. ये संघ प्रत्येक माह बैठक करते हैं, जिसमें प्रत्येक विकास खंड पर

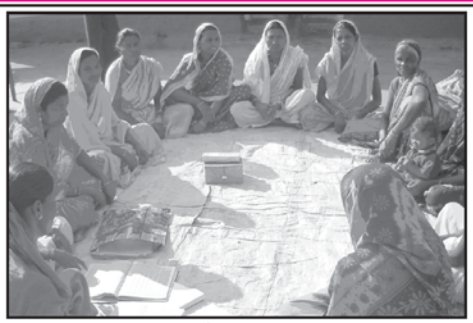

वीएलसी प्रतिनिधि भाग लेते हैं, आज संघ के पास अपने कार्यालय हैं और ये अपने उद्देश्य प्राप्त करने के प्रति तेजी से अग्रसर हैं.

एनएसएमएस ने महात्मा गांधी नरेगा में मजदूरी के प्रति विचार विमर्श किया और इससे 1000 से अधिक सदस्यों ने आगे आकर मजदूरी रोज़गार की मांग उठाई, जिसे महत्वपूर्ण सफलता मिली.

हाल ही में 40 सदस्यों ने वैकल्पिक रूप से सहभागी नाट्य समूहों का गठन किया जो घरेलू हिंसा और महात्मा गांधी नरेगा से जुड़े मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने और इससे निपटने में कार्यरत होंगे. ये समूह गांव-गांव घूमकर जागरूकता नाटकों का आयोजन करते हैं और इस प्रकार ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को अपने से जोड़ते हैं. यह वह चरण है जहां महिलाएं खुद से जुड़े मुद्दों का स्वयं समाधान कर रही हैं. किसी ने भी परिकल्पना नहीं की थी कि एसएचजी के गठन से एकजुट होने और जागरूकता स्तर बढ़ाया जा सकेगा. आज महिलाएं बेहतर सामाजिक-आर्थिक और समाज में राजनीतिक स्थिति तथा अपने परिवार से समान हक और निर्णय लेने के संघर्ष के स्थान पर ढांचे और नेतृत्व से संघर्ष कर बैंक और अन्य संस्थाओं से बातचीत कर रही हैं.

(लेखक प्रदान परियोजना, बालाघाट में अधिशासी (परियोजना) पद पर कार्यरत हैं.
ईमेल : dheeraj@pradan.net)